

Dr•Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja College Ara
Date; 17/10/2025
Class: U.G Semester - 3rd
(MJC-3)
Developmental Psychology,
Topic - विकास की आवश्यकता एवं महत्व
(Need and Importance of Development)

(5) किशोरावस्था (Adolescence)

किशोरावस्था 12 वर्ष से 18 वर्ष तक होती है। यह वह अवधि है जब बालक व्यस्क होने लगता है और यह अवधि तब समाप्त होती है जब बालक कानूनी रूप से परिपक्व होत संक्रमण की अवस्था एक समस्या-आयु और एक ऐसा समय है जब व्यक्ति एक पहचान है। मनुष्य के जीवनकाल में यह अवधि महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक परिवर्तनों का समय (Puberty) एक कम समय की अवस्था है। यह बालक और बालिकाओं में विभिन्न आयु में की तलाश करता है। यह वयस्कता का प्रवेश द्वार है। किशोरावस्था में चयसंधि का प्रारम्भ है तथा लडकों में यह 14 वर्ष है तथा उनमें यह स्वप्नदोष कहलाता है। होता है। बालिकाओं में इसकी औसत आयु 13 वर्ष है तथा इसकी पहचान प्रथम रजःसाव कारकों से होता है, जैसे-स्वास्थ्य, पोषण और संवेगात्मक दबाव। किशोरावस्था के वयःसंधि में तीव्र वृद्धि और परिवर्तन का निर्धारण आनुवांशिक कारकों एवं पर्यावरणीय विकासात्मक कार्य में बालकों के दृष्टिकोण और व्यवहार में परिवर्तन होता है। कुछ किशोर इन विकास कार्यों में आकृष्ट होने के साथ परिपक्वता प्राप्त करते हैं तथा कुछ दूसरे प्रौढ़ावस्था में इसे जारी रखते हैं। किशोरावस्था में महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तनों में साथी-समूह प्रभाव और परिपक्व सामाजिक व्यवहार शामिल है। किशोरावस्था की कुछ महत्वपूर्ण अभिरुचियाँ मनोरंजन सम्बन्धी अभिरुचियाँ निजी और सामाजिक अभिरुचियाँ शैक्षिक अभिरुचियाँ, व्यावसायिक और धार्मिक अभिरुचियाँ तथा प्रतिष्ठा प्रतीकों में अभिरुचियाँ आदि सम्मिलित हैं। किशोरावस्था में नैतिकता में परिवर्तन होते हैं जो विशिष्ट नैतिक अवधारणाओं से अनुचित और उचित की सामान्य नैतिक अवधारणाओं में परिवर्तित हो जाते हैं तथा अंतःकरण के विकास द्वारा उनके व्यवहार पर नियन्त्रण होता है। किशोरावस्था उच्च आवेगों की अवधि है। अतः कभी-कभी बालक का परिवार के सदस्यों के साथ सम्बन्ध तनावपूर्ण हो जाता है।

(6) युवावस्था (Youth)

युवावस्था की अवधि 18 वर्ष से लगभग 40 वर्ष तक होती है। इस अवस्था में शारीरिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन घटित होते हैं। युवा प्रौढ़ावस्था व्यवस्थापन काल और प्रजनन काल होता है यह प्रतिबद्धताओं और स्वावलम्बन का समय होता है और मूल्य व्यवस्था में भी परिवर्तन होते हैं। व्यक्ति अपने नए जीवन विन्यासों में ढल जाता है। इस अवस्था में व्यक्ति का विकास कार्यों में निपुण होने के साधन, शारीरिक कार्यक्षमता, गामक और मानसिक योग्यताएँ, अभिप्रेरणा और एक अच्छी भूमिका-प्रतिरूप होते हैं। व्यक्तिगत अभिरुचियों में कपड़ों में रुचि रखना और अपने आप को दर्शनीय रखना शामिल है। व्यस्क व्यक्ति परिपक्व और सम्माननीय होना चाहता है तथा धन और धर्म के विषयों में परिस्थिति प्राप्त करना चाहता है। इस अवधि में सामाजिक कार्यकलाप पारिवारिक और व्यवसायिक उत्तरदायित्वों के कारण कम हो जाते हैं। यही वह समय होता है जब व्यक्तियों को अपने व्यावसायिक जीवन की योजना बनानी पड़ती है। व्यावसायिक समायोजन अत्यन्त कठिन समय है। जिसमें व्यवसाय का चयन, अपने व्यवसाय में व्यवस्थापन और कार्य के अनुसार समायोजन करना शामिल है। इस अवधि में पारिवारिक समायोजन अत्यन्त कठिन भी हो सकता है। पारिवारिक भूमिकाओं और उत्तरदायित्व में

अनेक परिवर्तन होते हैं। वैवाहिक समायोजन के लिए व्यक्ति को अपनी दिनचर्या में भी परिवर्तन लाने की आवश्यकता पड़ सकती है।

(7) मध्य प्रौढ़ावस्था अथवा मध्यावस्था (Middle Adulthood)

मध्य प्रौढ़ावस्था 40 वर्ष की आयु से आरम्भ होकर 65 वर्ष की आयु तक होती है। इस अवधि में शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों में हास होने लगता है। मध्यावस्था कठिन समय हो सकता है तथा इस अवस्था का सफल समायोजन पूर्व की अवस्थाओं में निर्धारित अनिवार्य आधार पर निर्भर करता है। यह आयु संक्रमण और तनाव की अवधि कहलाती है। यह अवधि होता उपलब्धियों और मुल्यांकनों की अवधि कहलाती है। इस अवस्था में बच्चे बड़े हो चुके होते हैं और उच्च अध्ययन अथवा रोजगार के लिए बाहर गए होते हैं या वे विवाहित होते हैं और अपना बसेरा अलग बसा लेते हैं। व्यक्ति अचानक अकेला हो जाता है और अपने खाली समय का उपयोग करना नहीं जानता। रूपरंग (चेहरे) शरीर क्रियात्मक कार्यप्रणाली और कामुकता में शारीरिक परिवर्तन हो जाते हैं और इसके साथ समायोजन करना अत्यन्त कठिन हो जाता है। महिलाओं में रजोनिवृत्ति आदि परिवर्तन हो जाते हैं क्योंकि एस्ट्रोजन (महिला हार्मोन) में कमी हो जाती है और मनोवैज्ञानिक तनाव हो जाता है। जबकि पुरुषों में शरीर क्रियात्मक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन होते हैं जो उनकी मनोवृत्ति, व्यवहार और स्व-मूल्यांकन को प्रभावित करते हैं। मध्यावस्था में मानसिक हास आरम्भ होता है। धर्म में अभिरुचि मध्यावस्था में बढ़ जाती है। इस अवस्था में कम मनोरंजनात्मक रुचियों के अतिरिक्त अधेड़ व्यक्ति के प्रति रुझान होने की अपेक्षा व्यस्क (प्रौढ़) के प्रति रुझान होता है।

(8) उत्तर प्रौढ़ावस्था / वृद्धावस्था (Late Adulthood/Old Age)

उत्तर प्रौढ़ावस्था 60 वर्ष की आयु से आरम्भ होती है और मृत्यु तक चलती है। इस अवस्था में मनोवैज्ञानिक कमी तीव्रत तीव्रता से हो जाती है। है। प्रायः यह देखा गया है कि व्यक्तियों में जरण से उनके प्रभाव में कमी आती है क्योंकि शारीरिक जरण मनोवैज्ञानिक जरण से पहले होता है। शारीरिक परिवर्तनों में चेहरा, शारीरिक गठन में और विभिन्न आंतरिक शारीरिक प्रणालियों में परिवर्तन, विभिन्न शरीर क्रियात्मक पों कार्यप्रणाली में परिवर्तन, विभिन्न शरीर क्रियात्मक कार्यप्रणाली में परिवर्तन, संवेदी और यौन परिवर्तन शामिल है। गामक क्षमताओं में परिवर्तन शक्ति और गति में परिवर्तन होते हैं तथा व्यक्ति को नवीन योग्यताएँ प्राप्त करने में अधिक समय लगता है। इस अवस्था में व्यक्ति की मानसिक योग्यताओं में परिवर्तन होने के विभिन्न कारण है। इनमें से महत्वपूर्ण है पर्यावरणीय उद्दीपन की कमी और मानसिक रूप से सतर्क रहने की प्रेरणा का अभाव। आवास और वैवाहिक परिस्थिति में परिवर्तन, स्वास्थ्य और आर्थिक परिस्थिति का बिगड़ना तथा मृत्यों में परिवर्तन जैसे विभिन्न कारणों से रुचियों में परिवर्तन होते हैं। वृद्धावस्था में स्वास्थ्य, आर्थिक और वैवाहिक स्थिति में परिवर्तन आने से मनोरंजनात्मक कार्यकलापों में भी परिवर्तन आता है। हमारे समाज में वृद्धों के लिए सर्वाधिक रहन-सहन की सामान्य रुढ़ियाँ हैं-वृद्ध दंपति अकेला रहता है, वृद्ध दम्पति अपने विवाहित पुत्र एवं परिवार के साथ रहता है। वृद्ध, विधवा अथवा विधुर विवाहित अपनी संतान के साथ रहते हैं। वर्तमान समय में बूढ़े-बुजुर्ग वृद्धाश्रमों में रह रहे हैं। इस अवस्था में विशेष रूप से समायोजन में समस्याएँ आती है जो दूसरों पर शारीरिक और आर्थिक निर्भरता में वृद्धि, नए सम्बन्ध स्थापित करना, अपने खाली समय में नई रुचियों और कार्यकलापों में सम्मिलित होना भी बढ़ गया है। वृद्धों को और भी अधिक समायोजन करना पड़ता है, क्योंकि इस अवस्था में उनकी निर्भरता के कारण उनकाउत्पीड़न भी हो सकता है। इस अवस्था में धर्म में रुचि बढ़ जाती है, ऐसा मृत्यु की चिंता के कारण भी हो सकता है। इस अवस्था में सामान्य शारीरिक संकट रोग, कुपोषण, शारीरिक बाधाएँ, दुर्घटनाएँ आदि की समस्या रहती है।